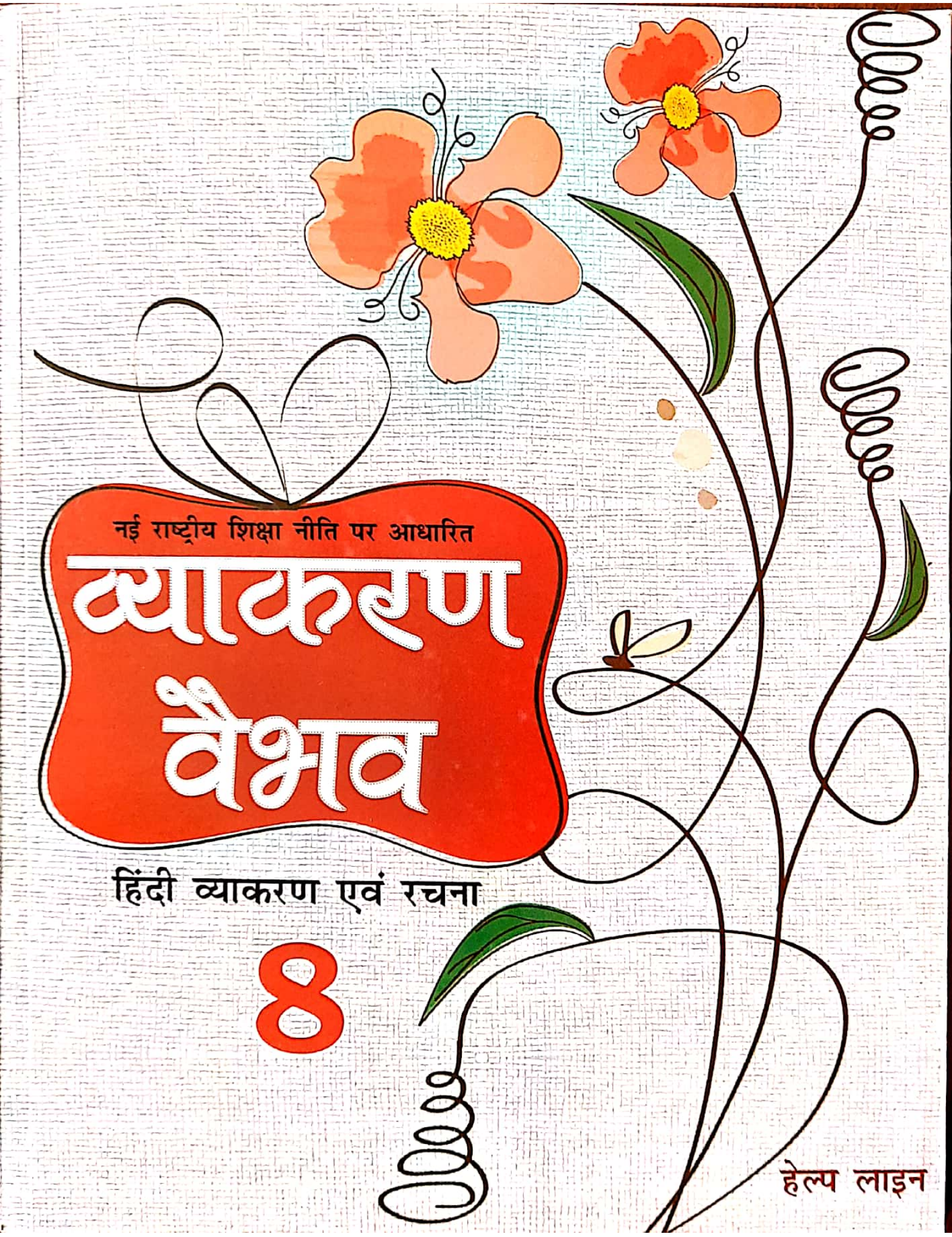

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर आधारित

व्याकरण वैभव

हिंदी व्याकरण एवं रचना

8

हेल्प लाइन

Scanned with CamScanner

1 भाषा, बोली, लिपि और व्याकरण

Language, Dialect, Script and Grammar

भाषा

मानव विभिन्न ढंगों से अपने भावों एवं विचारों को प्रकट करता है। वह अपने भावों एवं विचारों को प्रकट करने के लिए प्राय: संकेतों, ध्वनियों अथवा चिह्नों का सहारा लेता है।

1

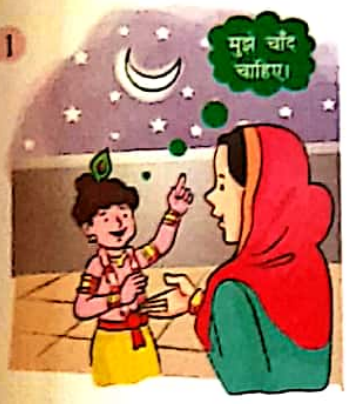

2

3

इन चित्रों में सभी अपने-अपने मन के भावों और विचारों को प्रकट कर रहे हैं। बच्चा बोलकर तथा ट्रैफिक पुलिस का सिपाही संकेतों के द्वारा अपने विचारों या भावों को दूसरों तक पहुँचा रहे हैं। शिक्षिका लिखकर अपने विचारों को बच्चों तक पहुँचा रही है।

वैसे तो इन सभी माध्यमों से विचारों का आदान-प्रदान किया जाता है, किंतु सांकेतिक भाषा को भाषा की श्रेणी में नहीं रखा जाता। क्योंकि संकेतों से सभी बातें और भाव व्यक्त नहीं किए जा सकते।

इस प्रकार हमें अपने संपूर्ण भावों और विचारों को प्रकट करने के लिए भाषा की आवश्यकता होती है।

भाषा की उत्पत्ति संस्कृत की 'भाष्' धातु से मानी जाती है जिसका अर्थ है– 'बोलना'।

भाषा मन के भावों या विचारों को प्रकट करने का माध्यम है।

जिस माध्यम के द्वारा मनुष्य अपने भावों या विचारों का आदान-प्रदान करता है, उसे **भाषा** कहते हैं।

भाषा के रूप

भाषा के दो रूप हैं–

1. मौखिक भाषा
2. लिखित भाषा

1. मौखिक भाषा : भाषा का जो रूप मुख से बोला, कान से सुना जाए, समझा-समझाया जाए, उसे मौखिक भाषा का नाम दिया गया है। इस रूप में अपनी बात बोलकर दूसरों तक पहुँचाई जाती है और सुनकर समझी जाती है।

बोलचाल की भाषा को **मौखिक भाषा** कहते हैं।

2. लिखित भाषा : भाषा को जब लिपि की सहायता से लिखा-पढ़ा जाने लगता है, तो भाषा का यह रूप लिखित भाषा कहलाता है। इस रूप में लिखकर विचार प्रकट किए जाते हैं और पढ़कर समझे जाते हैं।

जब उच्चरित ध्वनि-संकेतों को निश्चित चिह्नों द्वारा लिखकर अंकित किया जाता है, तो उसे **लिखित भाषा** कहते हैं।

लिपि

मौखिक ध्वनियों को लिखकर प्रकट करने के लिए निश्चित किए गए चिह्नों के व्यवस्थित रूप को **लिपि** कहते हैं। लिपि की भूमिका मौखिक भाषा की आत्मा को शरीर प्रदान करने जैसी है।

Scanned with CamScanner

प्रत्येक भाषा की अपनी लिपि होती है। संसार में अनेक भाषाएँ हैं और उनकी पृथक-पृथक लिपियाँ हैं–

भाषाएँ	लिपियाँ
संस्कृत, हिंदी, मराठी, नेपाली	देवनागरी
पंजाबी	गुरुमुखी
उर्दू	फ़ारसी
अंग्रेज़ी, फ्रेंच, जर्मन	रोमन
रूसी	रूसी
अरबी, फ़ारसी	फ़ारसी

देवनागरी लिपि की विशेषताएँ

देवनागरी लिपि बाईं ओर से दाईं ओर को लिखी जाती है। (फ़ारसी लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती है।)

- इसे बहुत ही वैज्ञानिक लिपि माना गया है।
- देवनागरी लिपि में प्रत्येक ध्वनि के लिए एक चिह्न निर्धारित है।
- इसके लेखन एवं मुद्रण में एकरूपता होती है। (रोमन, अरबी-फ़ारसी में दोनों रूप अलग-अलग होते हैं।)

संसार की भाषाएँ

संसार में अनेक भाषाएँ प्रयोग में लाई जाती हैं। भिन्न-भिन्न देशों में भिन्न-भिन्न भाषाओं का विकास हुआ है। उनकी लिपियाँ और उच्चारण विधियाँ बनाई गई हैं। हिंदी, अंग्रेज़ी, संस्कृत, फ्रेंच, स्पेनिश, चीनी, जापानी, अरबी, फ़ारसी, उर्दू, रूसी, जर्मन आदि संसार की प्रमुख भाषाएँ हैं।

हिंदी भाषा का विकास

हिंदी, संस्कृत से जन्मी है। जिस तरह जन्म लेने वाले नए प्राणी अपने जन्मदाताओं का 'रिप्लिका' (Riplica) नहीं होते, वैसे ही हिंदी ने भी अपनी जड़ों को न छोड़ते हुए अपनी शाखाओं का विकास-विस्तार अनेक दिशाओं में किया है। हिंदी पर केवल संस्कृत का ही नहीं अपितु उर्दू (अरबी, फ़ारसी), पुर्तगाली, अंग्रेज़ी तथा दूसरी कई भाषाओं की थोड़ी-बहुत छाप अवश्य है।

भाषाओं ने कभी भी शत्रुता को अपना धर्म नहीं बनने दिया, भले ही आदमी भाषा के नाम पर सदियों बँटा रहा। यों भाषा के माध्यम से, भाषा के सहारे समुदाय और व्यक्तियों को कम कष्ट नहीं झेलना पड़ा।

तो भी–

हिंदी भारत-यूरोपीय भाषा परिवार (भारोपीय) की भाषा है। अंग्रेज़ी, फ्रेंच, जर्मन, रूसी और अरबी-फ़ारसी उसी भाषा परिवार की भाषाएँ हैं। भारत में ही द्रविड़ परिवार की भाषाएँ तेलुगु, मलयालम, कन्नड़ हैं।

हिंदी हिंदुस्तान की सभी भाषाओं के साथ अनिवार्य रूप से जुड़ी है, चाहे वे भाषाएँ मूल स्रोत के रूप में भिन्न परिवारों की ही क्यों न हों।

हिंदी के विकास की कड़ी इस प्रकार है–

वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत, पाली प्राकृत, अपभ्रंश हिंदी तथा आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ पंजाबी, मराठी, गुजराती, बांग्ला इत्यादि।

बोली

भाषा के क्षेत्रीय रूप को बोली कहते हैं। इसका प्रयोग बोल-चाल में किया जाता है। जैसे– मेवाती, बुंदेली, मगही, बघेली, बाँगड़ू आदि। बोली में प्राय: साहित्य की रचना नहीं होती। जब बोली में साहित्य की रचना होने लगती है तो वह भाषा का रूप ले लेती है; जैसे ब्रजभाषा, भोजपुरी आदि।

Scanned with CamScanner

उपभाषाएँ एवं बोलियाँ–

बोली की अपेक्षा उपभाषा का क्षेत्र विस्तृत होता है। एक उपभाषा में अनेक बोलियाँ हो सकती हैं।

पूर्वी हिंदी, पश्चिमी हिंदी, पहाड़ी हिंदी, राजस्थानी हिंदी और बिहारी हिंदी; हिंदी की प्रमुख पाँच उपभाषाएँ हैं। इन्हीं पाँचों के अंतर्गत हिंदी क्षेत्र की मुख्य बोलियाँ वर्गीकृत की जाती रही हैं–

उपभाषाएँ		बोलियाँ
पूर्वी हिंदी	–	अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी।
पश्चिमी हिंदी	–	खड़ी बोली, हरियाणवी (बाँगड़ू), ब्रजभाषा, बुंदेली, कन्नौजी।
राजस्थानी हिंदी	–	मालवी, जयपुरी, मेवाती, मारवाड़ी, निमाड़ी।
पहाड़ी हिंदी	–	गढ़वाली, कुमायूँनी, कुल्लुई।
बिहारी हिंदी	–	मैथिली, मगही, भोजपुरी।

यों हर दस-बीस किलोमीटर पर भाषा या बोली के बोलने का लहजा बदल जाता है।

राष्ट्रभाषा– वह भाषा जिसका प्रयोग देश के अधिकांश नागरिक करते हैं, राष्ट्रभाषा कहलाती हैं। इस प्रकार हिंदी को हम राष्ट्रभाषा कह सकते हैं, परंतु इसे संविधान द्वारा अभी तक राष्ट्रभाषा के रूप में मान्यता नहीं मिली है।

राजभाषा– किसी देश के राजकाज की भाषा राजभाषा कहलाती है। हिंदी को 14 सितंबर 1949 को संविधान द्वारा राजभाषा के रूप में मान्यता प्रदान की गई थी। इस कारण 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है। हिंदी भारत सरकार के साथ-साथ उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, मध्यप्रदेश, बिहार आदि राज्यों में भी राजभाषा के रूप में प्रयोग की जाती है।

साहित्यिक भाषा– सामान्यतः पठन-पाठन की भाषा साहित्यिक भाषा कहलाती है। साहित्य किसी जाति और वर्ग के जीवन की झाँकी प्रस्तुत करता है और ज्ञान-राशि का कोश होता है। कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास, निबंध, आलोचना, रिपोर्ताज आदि साहित्यिक विधाएँ किसी देश के समाज, संस्कृति और इतिहास का सजीव चित्र प्रस्तुत करती हैं। साहित्यिक भाषा ही राष्ट्रीय अभिव्यक्ति का माध्यम होती है।

संपर्क भाषा– देश के लोग जिस भाषा का प्रयोग पारस्परिक संपर्क करने के लिए करते हैं, उसे संपर्क भाषा कहते हैं। भारत की संपर्क भाषा हिंदी है। इसका प्रयोग कार्यालयों, पत्र-पत्रिकाओं, चलचित्रों, रेडियो, दूरदर्शन आदि में होता है।

भारतीय संविधान में स्वीकृत भाषाएँ–

भारतीय संविधान में बाईस भाषाएँ स्वीकृत हैं– हिंदी, संस्कृत, उर्दू, डोगरी, पंजाबी, मराठी, गुजराती, उड़िया, बांग्ला, असमिया, कोंकणी, कन्नड़, तमिल, तेलुगु, मलयालम, कश्मीरी, बोडो, मैथिली, नेपाली, मणिपुरी, सिंधी और संथाली।

मानक भाषा– हिंदी भाषा का क्षेत्र बहुत व्यापक होने के कारण इसके वर्णों एवं शब्दों पर विभिन्न बोलियों एवं उपभाषाओं का प्रभाव पड़ता रहता है। इस कारण उनके एक से अधिक रूप प्रचलित हो जाते हैं और यह निर्धारित करना कठिन हो जाता है कि इसका कौन-सा रूप मानक और शुद्ध है। इस समस्या के चलते केंद्रीय हिंदी निदेशालय ने विद्वानों के परामर्श से हिंदी वर्णमाला में सर्वत्र एकरूपता बनाए रखने के लिए हिंदी वर्णमाला का मानक रूप निर्धारित किया है; जैसे–

अमानक रूप	मानक रूप	अमानक रूप	मानक रूप
ग्र	अ	नये	नए
भ्क	झ	चन्दन	चंदन
द्व	द्व	अनन्त	अनंत
रव	ख	आयी	आई

केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा निर्धारित मानक हिंदी वर्तनी संबंधी मुख्य बिंदु

- संयुक्त वर्ण पाई हटाकर, घुंडी को आधा कर तथा हलंत लगाकर बनाए जाएँगे। जैसे– सम्मान, मुक्त, चिह्न।
- विभक्ति-चिह्न संज्ञा और विशेषण शब्दों के साथ, अलग लिखे जाएँगे। जैसे– गांधी जी ने, बच्चों ने, घर पर, बूढ़े ने, रोगी ने, ग्रामीण ने, पंजाबी ने।

- सर्वनामों के साथ विभक्ति-चिह्न मिलाकर लिखे जाएँगे। जैसे– मैंने, आपको, उसपर, किससे। सर्वनाम के बाद 'ही, तक' आए तो विभक्ति-चिह्न अलग लिखे जाएँगे। जैसे– आप ही को, उस तक को।
- सर्वनामों के बाद यदि दो परसर्ग हों, तो पहला मिलाकर और दूसरा अलग लिखा जाए। जैसे– उसके लिए, इसमें से।
- क्रिया पद के सभी शब्द अलग लिखे जाएँगे। जैसे– खाता था, खाया करता था, खाया जा सकता है।
- तत्पुरुष समास के वे शब्द जो किसी एक संकल्पना के सूचक हों, उन्हें मिलाकर लिखा जाएगा। जैसे– ग्रामसभा, आत्महत्या, भाषाविज्ञान।
- 'जी, श्री, भर, मात्र' अव्यय शब्द से अलग लिखे जाएँगे। जैसे– पिता जी, श्री राजेश, दिन भर की दौड़-धूप, इतना भर बता दो, पाँच रुपये मात्र।
- समस्तपदों में 'प्रति, यथा' आदि अव्यय पृथक नहीं लिखे जाएँगे। जैसे– प्रतिशत, प्रतिदिन, यथाशक्ति, यथोचित।
- श्रुतिमूलक 'य' और 'व' के क्रिया रूप इस तरह से प्रयोग किए जाएँगे–
  आया आए, आई आईं (हुवा...) हुआ हुए, हुई हुईं
- जिन शब्दों में मूल रूप से 'य' और 'व' शब्द के अंग हों, तो वे छोड़े नहीं जा सकते। जैसे– रुपया – रुपये, पराया – पराये, पहिया – पहिये, उत्तरदायी – उत्तरदायित्व, स्थायी, अव्ययीभाव, दायाँ – दायें, करुणामय – करुणामयी।
- संयुक्त व्यंजन में पंचमाक्षर के स्थान पर अनुस्वार (ं) का प्रयोग होगा। जैसे– शंख, चंचल, डंडा, अंत, कंपन।
- शिरोरेखा के ऊपर मात्रा के साथ चंद्रबिंदु लगाने के लिए चंद्रबिंदु के स्थान पर बिंदु (अनुस्वार) लगाया जा सकता है। जैसे– मैं – मैं, गेंद – गेंद। अन्य स्थानों पर चंद्रबिंदु लगाया जाएगा।
- अंग्रेज़ी और उर्दू से हिंदी में आए शब्दों में नासिक्य व्यंजन पूरा लिखा जाएगा। जैसे– लिमका, तनख्वाह, तिनका, इनकार, इनसान।
- हिंदी में शब्दों के अंत का हलंत प्रायः लुप्त हो चुका है। जैसे– महान, परिषद, संसद, विद्वान।
- संधि-विच्छेद करते समय हल्-चिह्न अवश्य दिखाएँ। जैसे– उल्लास = उत् + लास, उन्नयन = उत् + नयन।
- निम्नलिखित शब्दों में तीन के स्थान पर दो व्यंजन वाले शब्दों का प्रयोग बेहतर होगा।
  महत्त्व – **महत्व**, तत्त्व – **तत्व**, अर्द्ध – **अर्ध**।
- संस्कृत शब्द शय्या 'शयन' से बना है। इसे शैय्या न लिखा जाए।
- पूर्वकालिक प्रत्यय 'कर' क्रिया से मिलाकर लिखा जाए। जैसे– खेलकर, सोकर, रो-रोकर।
- जब 'वाला' प्रत्यय से अन्य संज्ञा या विशेषण शब्द बने तो वह एक शब्द के रूप में मिलाकर लिखा जाए। जैसे– चायवाला, गाँववाला, फूलवाली, टोपीवाला।
- अरबी-फ़ारसी की क़, ख़, ग़, ज़, फ़ ध्वनियाँ हिंदी में आई हैं। इनमें से क़, ख़, ग़, हिंदी में परिवर्तित होने की प्रक्रिया में है। ज़, फ़ अभी प्रचलित हैं।
- हिंदी में कुछ शब्दों के दो रूप बराबर चल रहे हैं और दोनों को ही मानक रूप में मान्यता है। जैसे– गरमी/गर्मी, गरदन/गर्दन, बरफ़/बर्फ़, बिलकुल/बिल्कुल, कुरसी/कुर्सी, बरदाश्त/बर्दाश्त, दोबारा/दुबारा। इन वैकल्पिक रूपों में से प्रथम रूप को प्राथमिकता दी जाए।

भाषा और व्याकरण

भाषा के व्यवस्थित रूप का ज्ञान कराने वाला शास्त्र **व्याकरण** कहलाता है।

जब कोई बच्चा वातावरण से और अपने भीतर के संघर्ष से, बिना पाठशाला जाए, औपचारिक शिक्षा के अभाव में किसी भाषा विशेष को ग्रहण करता है, तो वह स्वतः ही उसके व्याकरण को आत्मसात करता चला जाता है। व्याकरण को बहुधा भाषा से अलग करके देखा जाता है, लेकिन वह भाषा का भीतरी हिस्सा है।

व्याकरण वह शास्त्र है, जिसके द्वारा भाषा के वर्णों, शब्दों व वाक्यों के शुद्ध स्वरूप व शुद्ध प्रयोग का ज्ञान होता है।

Scanned with CamScanner

व्याकरण के अंग

वर्ण-विचार | शब्द-विचार | वाक्य-विचार

वर्ण-विचार – इसमें वर्णों के भेद, उच्चारण, लेखन एवं उनके संयोजन पर विचार किया जाता है।
शब्द-विचार – इसमें शब्दों की उत्पत्ति, भेद, रूपांतर एवं रचना पर विचार किया जाता है।
वाक्य-विचार – इसमें वाक्य संरचना, वाक्य भेद, वाक्य रूपांतरण एवं विराम-चिह्नों आदि पर विचार किया जाता है।

हमने जाना

1. भाषा मन के भावों-विचारों को प्रकट करने का माध्यम है।
2. भाषा के दो रूप होते हैं– (क) मौखिक (ख) लिखित
3. मौखिक ध्वनि को लिखने के चिह्न लिपि कहलाते हैं।
4. भाषा के क्षेत्रीय रूप को बोली कहते हैं।
5. बोली का विस्तृत रूप उपभाषा कहलाता है।
6. किसी देश के अधिकांश नागरिकों द्वारा बोली जाने वाली भाषा राष्ट्रभाषा कहलाती है।
7. किसी देश के राज-काज की भाषा राजभाषा कहलाती है। हिंदी भारत की राजभाषा है।
8. साहित्य किसी भाषा की ज्ञान-राशि का कोश होता है।
9. भारतीय संविधान में बाईस भाषाएँ स्वीकृत हैं।
10. व्याकरण भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान कराकर उसका शुद्ध प्रयोग सिखाता है।

अभ्यास

मौखिक प्रश्न

1. नीचे दिए गए प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–
   (क) भाषा किसे कहते हैं?
   (ख) भाषा के कितने रूप होते हैं? नाम बताइए।
   (ग) हिंदी दिवस कब और क्यों मनाया जाता है?
   (घ) हिंदी और उर्दू भाषा की लिपि का नाम क्या है?
   (ङ) व्याकरण का ज्ञान क्यों आवश्यक है?

लिखित प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. सही उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाइए–
   (क) लिखित भाषा में विचारों को कैसे व्यक्त करते हैं?
   संकेतों द्वारा ○ बोलकर ○ लिखकर ○ सुनकर ○
   (ख) हिंदी भाषा को राजभाषा का दर्ज़ा कब मिला?
   14 सितंबर, 1949 ○ 14 दिसंबर, 1947 ○ 14 अगस्त, 1950 ○ 15 अगस्त, 1947 ○
   (ग) पंजाबी की लिपि है–
   देवनागरी ○ गुरुमुखी ○ फ़ारसी ○ रोमन ○
   (घ) इनमें से कौन-सी बोली पश्चिमी हिंदी के अंतर्गत नहीं आती है?
   खड़ी बोली ○ ब्रजभाषा ○ कन्नौजी ○ अवधी ○

Scanned with CamScanner

(ङ) वाक्य-विचार के अंतर्गत क्या अध्ययन किया जाता है?

(क) शब्दकोश का ◯ (ख) वर्णों का ◯

(ग) वाक्यों का ◯ (घ) क और ग दोनों का ◯

2. सही कथन के सामने सही (✓) और गलत कथन के सामने गलत (×) का चिह्न लगाइए :

(क) बोली का भी व्याकरण होता है। ◯

(ख) बोली का अपना कोई साहित्य नहीं होता। ◯

(ग) भाषा के क्षेत्रीय रूप को बोली कहते हैं। ◯

(घ) एक बोली के अंतर्गत कई भाषाएँ आ सकती हैं। ◯

3. कोष्ठक में से सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थान भरिए–

(क) हिंदी ____________ लिपि में लिखी जाती है। (गुरुमुखी / देवनागरी)

(ख) भाषा का रूप ____________ रहता है। (बदलता / स्थिर)

(ग) ____________ हमारे देश की राजभाषा है। (हिंदी / अंग्रेजी / पंजाबी)

(घ) भाषा का क्षेत्र बोली के क्षेत्र से ____________ होता है। (बड़ा / छोटा / घटिया)

(ङ) ____________ भाषा का अध्ययन व्याकरण में नहीं होता। (लिखित / मौखिक / सांकेतिक)

4. भारतीय और विदेशी भाषाओं को छाँटकर उनके वर्ग में लिखिए :

हिंदी, अंग्रेज़ी, जर्मन, पंजाबी, रूसी, तमिल, मलयालम, जापानी, असमिया, फ़ारसी

भारतीय भाषा	विदेशी भाषा
____________	____________
____________	____________
____________	____________
____________	____________
____________	____________

5. भाषा की परिभाषा लिखिए। यदि भाषा न होती तो क्या होता?

6. भाषा के रूपों के नाम लिखिए। यदि लिखित भाषा न होती, तो समाज किस अवस्था में होता?

7. लिपि किसे कहते हैं? हिंदी, अंग्रेज़ी और पंजाबी की लिपियों के नाम लिखिए।

रचनात्मक क्रियाकलाप

- भारतीय संविधान में बाईस भाषाओं को मान्यता दी गई है। अपने चार-पाँच साथियों के साथ मिलकर उन भाषाओं के बारे में पता लगाइए कि कौन-सी भाषा किस राज्य में प्रयोग की जाती है। प्रत्येक भाषा के एक-एक साहित्यकार का नाम पता करके सूची तैयार कीजिए।
- वर्ग-पहेली में चार बोलियों और चार विदेशी भाषाओं के नाम ढूँढ़कर लिखिए–

जा	पा	नी	फ़ा	क	म
ति	ब्रू	अ	र	बी	भो
अं	ग	व	सी	फ्राँ	ज
जी	ढ़	धी	क	की	पु
मे	वा	ती	ड़	सी	री
क	ली	म	ती	ची	नी

बोलियाँ	विदेशी भाषाएँ
____________	____________
____________	____________
____________	____________
____________	____________

Scanned with CamScanner

2

वर्ण-विचार

Phonology

घर

कमल

उपर्युक्त शब्दों के टुकड़े करके देखते हैं–

घर = घ् + अ + र् + अ

'घर' शब्द में चार ध्वनियाँ प्रयोग में आई हैं।

कमल = क् + अ + म् + अ + ल् + अ

'कमल' शब्द में छह ध्वनियाँ हैं। ध्वनियों के लिखित रूप को **वर्ण** कहते हैं।

भाषा की वह छोटी-से-छोटी इकाई जिसके और टुकड़े नहीं किए जा सकते, **वर्ण** कहलाती है।

वर्णमाला

वर्णों के व्यवस्थित समूह को **वर्णमाला** कहते हैं।

वर्ण के भेद

हिंदी वर्णमाला में वर्णों के दो भेद माने गए हैं–

1. स्वर
2. व्यंजन

1. स्वर : जिन वर्णों के उच्चारण में हवा सीधे, मुख में बिना इधर-उधर घूमे बाहर आती है, उन्हें **स्वर** कहते हैं। स्वरों का उच्चारण स्वतंत्र रूप से बिना किसी अन्य ध्वनि की सहायता के किया जा सकता है।

हिंदी में 11 स्वर होते हैं– अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ = 11

अं : यह अनुस्वार बिंदु (ं) 'अ' के सिर पर बैठा है। इसे आप प के सिर पर बिठा दें, तो 'पं' बन जाएगा। इसका प्रयोग व्यंजनों की तरह होता है। यह न तो पूरी तरह स्वर है और न ही व्यंजन। अनुस्वार बिंदु का उच्चारण नाक से होता है। स्पर्श व्यंजनों में प्रत्येक वर्ग का जो पाँचवाँ अक्षर है, वही स्वररहित होकर अनुस्वार बिंदु के रूप में प्रयोग में आता है। इसे पंचमाक्षर की मात्रा की तरह देखा जाना चाहिए; जैसे–

चंदन = चन्दन   पंप = पम्प

अः : ये जो दो बिंदु (:) 'अ' के सामने लगे हैं, इन्हें विसर्ग कहा जाता है। इनका उच्चारण (कुछ-कुछ) अह् की तरह होता है; जैसे– प्रातः, अतः। इसे अधिकतर संस्कृत शब्दों के साथ ही प्रयोग किया जाता है।

अँ : इसका उच्चारण नाक और मुँह द्वारा किया जाता है। इसे अनुनासिक कहते हैं। इसका चिह्न चंद्रबिंदु (ँ) है। जैसे– गाँव, आँख, दाँत। जिन स्वरों की मात्राएँ शिरोरेखा के ऊपर निकली रहती हैं, वहाँ अनुनासिक को अनुस्वार (ं) के रूप में लगाया जाता हैं; जैसे– गोँद → गोंद, नीँद → नींद, ऐँठ → ऐंठ आदि।

Scanned with CamScanner

स्वर के भेद : उच्चारण में लगने वाले समय के आधार पर स्वर के तीन भेद होते हैं–

1. **ह्रस्व स्वर :** जिन स्वरों के उच्चारण में कम-से-कम समय लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर या मूल स्वर कहते हैं। ये संख्या में चार हैं– अ, इ, उ, ऋ।

2. **दीर्घ स्वर :** जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वरों की तुलना में लगभग दोगुना समय लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। ये संख्या में सात हैं– आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ तथा औ।

3. **प्लुत स्वर :** जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर से तीन गुना समय लगता है, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं। किसी स्वर को बहुत दीर्घ करने की स्थिति में '३' का चिह्न लगा दिया जाता है। प्राय: संस्कृत में ऐसा होता है; जैसे–

ओ३म् = ओम, पहले रूप में 'ओ' ध्वनि को देर तक बोला जाएगा।

ऑ : ऑ की ध्वनि अंग्रेज़ी से हिंदी में आई है। इसका प्रयोग कुछ अंग्रेज़ी शब्दों को हिंदी में लिखते समय होता है; जैसे– मॉडर्न, डॉक्टर, बॉल, टॉफ़ी आदि।

मात्रा : स्वरों का उच्चारण स्वतंत्र रूप से भी होता है तथा व्यंजनों के साथ मिलाकर भी होता है। स्वरों को व्यंजनों के साथ मिलाकर लिखने के लिए कुछ चिह्न निर्धारित किए गए हैं। व्यंजनों के साथ लिखे जाने के लिए स्वरों के निश्चित चिह्न ही मात्रा कहलाते हैं।

स्वर	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ
मात्रा	–	ा	ि	ी	ु	ू	ृ	े	ै	ो	ौ

स्वरों की मात्राओं का उच्चारण स्वरों की तरह ही होता है। लेकिन कभी-कभी थोड़ी विसंगतियाँ भी पैदा हो जाती हैं। जैसे–

पैसा = इसे 'पइसा' की तरह बोलने की परंपरा अब खड़ी बोली के मानक उच्चारण रूप में नहीं के बराबर है।

कैसा = 'कइसा' यह अशुद्ध उच्चारण है।

लेकिन गैया, मैया, भैया इन तीनों शब्दों को बोलते समय (ै) की मात्रा को पूरा न्याय मिलता है।

अनुनासिक और अनुस्वार का अंतर

अनुनासिक ध्वनि नाक और मुँह दोनों के सहयोग से बोली जाती है, जबकि अनुस्वार को बोलते समय नाक से आवाज़ आती है।

अनुस्वार का चिह्न है– (ं) अनुनासिक का चिह्न है– (ँ)

हंस तैर रहा है। हंस **हँस** रहा है।

↓ अनुस्वार ↓ अनुनासिक

सरलीकरण के युग में अनुनासिक ध्वनि को भी अनुस्वार की तरह लिखने की सिफ़ारिश की जा रही है। कुछ समाचार-पत्र तक इसे अपना चुके हैं। जैसे– हँसना को हंसना लिखना।

शिरोरेखा के ऊपर मात्रा वाले शब्दों में अनुनासिक ध्वनि को स्थानाभाव के कारण अनुस्वार की तरह लिखा जाता है; जैसे–

मैँ = मैं हैँ = हैं क्योँ = क्यों

2. **व्यंजन :** ऐसी ध्वनियाँ जिन्हें स्वाभाविक रूप से पूरा बोलते समय स्वरों की सहायता लेनी पड़ती है, व्यंजन कहलाती हैं। इन्हें बोलते समय मुख से निकलने वाली हवा एक से अधिक उच्चारण अवयवों को छूकर बाहर आती है। या यों कहें कि व्यंजनों का रास्ता टेढ़ा है। वैसे भी जब भोजन में व्यंजन बनाते हैं, तो उनमें कुछ मसाले मिलाने की आवश्यकता पड़ती है। व्यंजन मीठे बनाने हैं तो मीठा मिलाना होगा।

जैसे मीठा-नमकीन बिना कुछ मिलाए व्यंजन बेस्वाद से लगते हैं, वैसे ही बिना स्वर के व्यंजन (वर्ण) अधूरे से लगते हैं। बोलते समय तो 'अ' स्वर का सहयोग अवश्य ही चाहिए, लिखने में बेशक़ आप हलंत (्) लगा लें।

Scanned with CamScanner

व्यंजन परिवार के सदस्य

कवर्ग	क	ख	ग	घ	ङ		
चवर्ग	च	छ	ज	झ	ञ		
टवर्ग	ट	ठ	ड	ढ	ण	ड़	ढ़
तवर्ग	त	थ	द	ध	न		
पवर्ग	प	फ	ब	भ	म		
अंतस्थ	य	र	ल	व			
ऊष्म	श	ष	स	ह			
संयुक्त	क्ष	त्र	ज्ञ	श्र			

किसी भी व्यंजन को अ-रहित लिखने के लिए (जैसा कि ऊपर बताया गया है) कई तरीके से सहायता लेनी होगी।

1. हलंत लगाकर : क्, ख्, ग्।

2. पाई हटाकर : पाईवाले व्यंजनों को अ-रहित लिखने के लिए हलंत न लगाकर पाई को हटा दिया जाता है; जैसे– बच्चा, पन्ना।

3. घुंडी हटाकर : शब्द लिखते समय अ रहित 'क्' को 'क' के रूप में लिखना होगा; जैसे– हफ़्ता, मुफ़्त इत्यादि शब्दों में 'फ्' के साथ हुआ है।

अरबी-फ़ारसी के शब्दों में कुछ व्यंजन नुकता लगाकर भी लिखे जाते हैं।

जैसे– कागज़ (ज़), तूफ़ान (फ़) आदि।

व्यंजनों का वर्गीकरण : उच्चारण के आधार पर व्यंजनों को दो भागों में विभाजित किया जाता है–

1. उच्चारण स्थान के आधार पर।
2. उच्चारण करते समय लगने वाले प्रयत्न के आधार पर।

1. उच्चारण स्थान के आधार पर

वर्णों का उच्चारण मुख के अलग-अलग स्थानों से होता है–

कंठ्य ध्वनियाँ (गले से)	क ख ग घ ङ (पूरा कवर्ग)
तालव्य ध्वनियाँ (तालु से)	पूरा चवर्ग तथा य और श
मूर्धन्य ध्वनियाँ(तालु का सबसे ऊपरी भाग यानी मूर्धा से)	पूरा टवर्ग, ड़, ढ़ तथा ष
दंत्य (दाँतों की जड़ से)	त थ द ध
वर्त्स्य ध्वनियाँ (तालु और दाँत के बीच का उभरा हुआ हिस्सा)	न र ल स ज
ओष्ठ्य ध्वनियाँ (जिन्हें बोलते समय दोनों होंठ मिलते हैं)	प फ ब भ म (पूरा प वर्ग)
दंतोष्ठ्य (ऊपर के दाँत नीचे का होंठ)	व, फ
स्वरयंत्रीय (स्वर-यंत्र के मूल से)	ह, ऑ

Scanned with CamScanner

2. स्वर-यंत्रियों में कंपन के आधार पर

इस आधार पर व्यंजनों को दो भागों में बाँट लिया गया है–

(i) घोष या सघोष व्यंजन : इन व्यंजनों के बोलने में स्वर-यंत्र में कंपन होता है। इसमें प्रत्येक वर्ग का तीसरा, चौथा और पाँचवाँ व्यंजन

ग घ ङ
ज झ ञ
ड ढ ण • (ड़, ढ़)
द ध न
ब भ म

तथा य, र, ल, व, ह और ड़ हैं। ये ध्वनियाँ अपने आगमन की घोषणा करते हुए आती हैं। जहाँ से ये आती हैं उस स्थान को कँपा देती हैं।

(ii) अघोष व्यंजन : जिन व्यंजनों के उच्चारण में स्वर-यंत्रिका में कंपन नहीं होता, वे अघोष व्यंजन कहलाते हैं। ये हैं प्रत्येक वर्ग (स्पर्श व्यंजन) का पहला तथा दूसरा व्यंजन–

क ख
च छ
ट ठ
त थ
प फ

और श, ष, स तथा फ़। ये ऐसी ध्वनियाँ हैं, जो अघोष हैं।

2. उच्चारण में लगे प्रयत्न के आधार पर

उच्चारण के समय श्वास या वायु की मात्रा के आधार पर व्यंजनों को दो भागों में बाँटा गया है–

(i) अल्पप्राण : जो व्यंजन कम हवा से काम चला लेते हैं, वे अल्पप्राण कहलाते हैं। प्रत्येक वर्ग (स्पर्श व्यंजनों) का पहला, तीसरा और पाँचवाँ व्यंजन तथा ड़ और य, र, ल, व अल्पप्राण व्यंजन हैं–

क ग ङ
च ज ञ
ट ड ण
त द न
प ब म
य र ल व तथा ड़

अल्पप्राण

(ii) महाप्राण : जिन व्यंजनों को बोलते समय अधिक श्वास-वायु खर्च होती है, वे महाप्राण व्यंजन हैं। इस श्रेणी में प्रत्येक वर्ग का दूसरा और चौथा व्यंजन तथा ढ़, श, ष, स, ह व्यंजन आते हैं–

ख घ
छ झ
ठ ढ
थ ध
फ भ
ढ़ श ष स ह

महाप्राण

Scanned with CamScanner

3. उच्चारण अवयवों द्वारा किए जाने वाले अवरोधन की प्रकृति के आधार पर

(i) स्पर्श व्यंजन : जिन व्यंजनों के उच्चारण में मुख के अंग एक-दूसरे का स्पर्श करके वायु का मार्ग अवरुद्ध करते हैं, उन व्यंजनों को स्पर्श व्यंजन कहते हैं; जैसे– क, ख, ग, घ, ङ .... प, फ, ब, भ तक सभी।

(ii) ऊष्म व्यंजन : जिन व्यंजनों के उच्चारण के समय मुख के अंग एक-दूसरे के इतने निकट आ जाएँ कि बीच से हवा संघर्ष या घर्षण करती हुई निकले, तो ऐसे व्यंजनों को ऊष्म व्यंजन कहते हैं; ये चार हैं– श, ष, स, ह।

(iii) अंतस्थ व्यंजन : जिनका उच्चारण करते समय जीभ पूरी तरह मुख के किसी भाग को स्पर्श नहीं करती है; वे अंतस्थ व्यंजन कहलाते हैं; ये चार हैं– य, र, ल, व।

- **उत्क्षिप्त :** जिनके उच्चारण में जीभ का अग्रभाग ऊपर उठकर आगे आता है, फिर नीचे गिरता है; जैसे- ड़, ढ़।
- **संयुक्त व्यंजन :** जब दो या दो से अधिक स्वर रहित व्यंजन मिलकर एक नया व्यंजन बनाते हैं, तो वे संयुक्त व्यंजन कहलाते हैं। ये चार हैं– क्ष, त्र, ज्ञ, श्र।

क् + ष् + अ = क्ष	–	कक्षा, रक्षा	त् + र् + अ = त्र	–	त्रिशूल, त्रिभुज
ज् + ञ् + अ = ज्ञ	–	ज्ञान, यज्ञ	श् + र् + अ = श्र	–	श्रम, श्रवण

- **संयुक्ताक्षर :** जब एक स्वररहित व्यंजन का भिन्न स्वरसहित व्यंजन से मेल होता है तो वह संयुक्ताक्षर कहलाता है; जैसे– स्व, त्व, म्न, क्य, म्न आदि।
- **द्वित्व व्यंजन :** एक ही वर्ण एक साथ दो बार (पहली बार स्वररहित) आए , तो उसे द्वित्व व्यंजन कहते है; जैसे– पत्ता, भिन्न, गुस्सा इत्यादि।
- **पंचमाक्षर :** स्पर्श व्यंजनों को 'क' से 'म' तक पाँच वर्गों में बाँटा गया है। प्रत्येक वर्ग में पाँच वर्ण हैं। हर वर्ग का नाम उसके प्रथम वर्ण के नाम पर रखा गया है। वर्ग का अंतिम वर्ण (पाँचवाँ) पंचमाक्षर या पंचम वर्ण कहलाता है।

ङ, ञ, ण, न, म पंचमाक्षर हैं। इनका प्रयोग नीचे देखिए–

कङ्घा	=	कंघा
व्यञ्जन	=	व्यंजन
अण्डा	=	अंडा
चन्दन	=	चंदन
मुम्बई	=	मुंबई

→ **विशेष–** वर्तमान मानक वर्तनी में पंचम वर्णों के स्थान पर अनुस्वार (ं) का प्रयोग किया जाता है।

वर्ण-विच्छेद : किसी शब्द के सही उच्चारण को समझने के लिए यह पता लगाना कि बोलने और लिखने के क्रम में कौन-सा वर्ण पहले है और कौन-सा वर्ण या ध्वनि बाद में है, उस शब्द के वर्णों को अलग-अलग करके देखा जाता है। वर्णों को इस तरह अलग करना **वर्ण-विच्छेद** कहलाता है।

जैसे– भारत = भ् + आ + र् + अ + त् + अ

सिद्धार्थ = स् + इ + द् + ध् + आ + र् + थ् + अ

अन्याय = अ + न् + य् + आ + य् + अ

बलाघात : बोलने वाले और सुनने वाले की स्थिति (दूरी-निकटता) मन की स्थिति तथा शब्द का प्रयोग कहाँ और किस अर्थ में हो रहा है, आदि को ध्यान में रखकर ध्वनि विशेष को बोलते समय उसपर बल दिया जाता है। बल के इसी आघात को 'बलाघात' कहते हैं; जैसे–

वह आता

दो टूक

कलेजे के करता

पछताता पथ पर आता

Scanned with CamScanner

ठीक बलाघात से पढ़ने पर ही रचना के साथ न्याय होता है। एकाक्षरी शब्दों में 'जो' 'सो' एक अक्षर पर ही बल होगा लेकिन इससे भिन्न स्थितियों में; जैसे– संतान, 'ता'। जब शब्द में व्यंजनों के साथ सभी में ह्रस्व स्वर की मात्रा लगी हो, तो बलाघात अंतिम से पहले वाले वर्ण पर होता है; जैसे- सुकुल, बुलबुल, सतलुज।

तीन-चार वर्णों वाले शब्द में यदि बीच का वर्ण दीर्घ हो, तो उसी पर बलाघात रहता है; जैसे–

असीम, ज़मीन, नवीन, असमान इत्यादि।

वर्ण-संयोग

जब कोई वर्ण किसी अन्य वर्ण से जुड़ता है तो उसे वर्ण-संयोग कहते हैं। वर्ण-संयोग निम्नलिखित में से किसी भी प्रकार का हो सकता है–

1. व्यंजन और स्वर का संयोग– सभी व्यंजन स्वरों की सहायता से बोले जाते हैं। जब व्यंजन में स्वर नहीं मिला हो तो व्यंजन के नीचे हलंत लगा दिया जाता है–

क् + अ = क (स्वरयुक्त) क् (स्वररहित)

व्यंजन का व्यंजन से संयोग– व्यंजन का व्यंजन से संयोग करने पर संयुक्त ध्वनियाँ बनती हैं। निम्नलिखित नियमों के आधार पर व्यंजन को व्यंजन से मिलाया जाता है–

(क) अंत में खड़ी रेखा (पाई) वाले व्यंजनों; जैसे– ख, ग, घ, च, ज, झ, ञ, ण, त, थ, ध, न, प, ब, भ, म, य, ल, व, ष, स को इनसे आगे वाले व्यंजन से मिलाते समय इनकी पाई हटा देते हैं; जैसे–

ज् + व = ज्व	–	(ज्वार)	त् + य = त्य	–	(नित्य)
ख् + य = ख्य	–	(विख्यात)	ग् + य = ग्य	–	(भाग्य)
प् + य = प्य	–	(प्याला)	म् + ल = म्ल	–	(म्लान)

(ख) बिना पाई पाई वाले व्यंजन; जैसे– छ, ट, ठ, ड, ढ, द, ह का व्यंजन से संयोग करते समय प्रथम व्यंजन में हलंत लगाकर दूसरा व्यंजन पूरा लिखते हैं; जैसे–

ड् + ढ = ड्ढ	–	(गड्ढा)	द् + व = द्व	–	(द्वार)
द् + ध = द्ध	–	(शुद्ध)	ह् + न = ह्न	–	(चिह्न)
ट् + ट = ट्ट	–	(पट्टी)	द् + य = द्य	–	(यद्यपि)

विशेष– उपर्युक्त संयोग इस प्रकार भी लिखा जाता है परंतु अब यह मानक नहीं है।

ट्ट	–	पट्टी	द्य	–	यद्यपि	ड्ढ	–	गड्ढा
द्व	–	द्वार	द्ध	–	शुद्ध	ह्न	–	चिह्न

(ग) क् और फ् का वर्ण-संयोग इस प्रकार किया जाता है–

क् + त = क्त	–	(मुक्ता)	क् + ल = क्ल	–	(अक्ल)
फ़् + त = फ़्त	–	(मुफ़्त)	क् + व = क्व	–	(पक्वाशय)

(घ) 'र' वर्ण के संयोग– 'र' वर्ण के संयोग निम्नलिखित चार प्रकार से होते हैं–

1. जब 'र' स्वर रहित (र्) होता है, तो यह अगले व्यंजन के सिर पर लगाया जाता है। इस स्वर रहित 'र' को 'रेफ' कहते हैं; जैसे–

र् + द = र्द	–	(मर्द)	र् + य = र्य	–	(सूर्य)
र् + म = र्म	–	(कर्म)	र् + व = र्व	–	(पर्वत)
र् + श = र्श	–	(प्रदर्शन)	र् + ष = र्ष		(संघर्ष)

2. जब 'र' से पूर्व व्यंजन स्वर रहित हो, तो 'र' उस व्यंजन के पैरों में लगाया जाता है; जैसे–

द् + र = द्र	–	(समुद्र)	क् + र = क्र	–	(चक्र)
प् + र = प्र	–	(प्रसून)	ग् + र = ग्र	–	(ग्रह)
त् + र = त्र	–	(मित्र)	म् + र = म्र	–	(उम्र)

Scanned with CamScanner

वर्तनी की दुनिया

मौखिक ध्वनियों को जब लिपिबद्ध करते हैं, तो जो वर्ण या वर्ण-समुदाय संगठित होता है, उसे **वर्तनी** कहते हैं। वर्तनी का सीधा संबंध उच्चारण से तो है ही साथ में कुछ और बातें भी हैं जिनका ध्यान रखा जाना चाहिए।

मानकता तथा सरलता की दृष्टि से हिंदी की वर्तनी में समय-समय पर संशोधन भी किए गए हैं। इन संशोधनों की अद्यतन जानकारी तथा ध्वनियों के लिए प्रयुक्त लिपि-चिह्नों को कैसे पढ़ा जाए, इसपर सावधानीपूर्वक ध्यान देना ज़रूरी है। वर्तनी के मामले में कहा जा सकता है– 'सावधानी हटी और दुर्घटना घटी।' यहाँ तो 'बचाव में ही बचाव है।'

'जैसा लिखा गया है, उसे वैसा पढ़ो' पर ध्यान देने से वर्तनी की गड़बड़ियाँ सुधरती हैं। वर्तनी ठीक रहे, इसके लिए यह भी ज़रूरी है कि उच्चारण में हम शब्दों का वही रूप बोलें, जो मानक रूप से लिखा-पढ़ा जाता है।

उच्चारण में ली जाने वाली छूट ही समस्या की जड़ है; जैसे–

बोल्ते = 'बोलते' बोला जाना चाहिए।

गल्तियाँ = 'गलतियाँ' बोला जाना चाहिए।

बहोत = 'बहुत' बोला जाना चाहिए।

ध्यान देने योग्य कुछ बातें–

1. संज्ञा शब्दों के साथ विभक्ति / परसर्ग / कारक-चिह्न का अलग लिखा जाना; जैसे–

राधा को रमेश ने बरतन में दूध दिया।

2. सर्वनाम शब्दों में स्थिति बदल जाती है अर्थात कारक-चिह्न साथ ही लिखें; जैसे– उसको उसने उसमें दूध दिया। यदि विभक्ति-चिह्न दो हो जाएँ, तो दूसरा विभक्ति-चिह्न अलग से आता है; जैसे–

आपके लिए इत्यादि।

◎ संयुक्त क्रियाओं का अलग लिखा जाना; जैसे–

वह जा रहा है। तुम लौट आओ। वे सो गए हैं।

बोलने में अधूरा लेकिन लिखने में पूरा–

महान् बोला जाता है लेकिन लिखेंगे महान। मानक वर्तनी के अनुसार यही स्थिति हठांत् और अर्थात् के साथ होगी। लिखते समय हलंत को विदा लेनी होगी।

◎ योजक का आना

एक शब्द का दो बार = बार-बार, घर-घर

द्वंद्व समास = अपना-पराया
माता-पिता

शब्द-युग्म में = आगे-पीछे
यहाँ-वहाँ

तुलना करते समय = पीला-सा, नीला-सा

◎ पूर्वकालिक क्रिया में कर, साथ में आता है; जैसे–

नहाकर, छुपाकर, जाकर, देखकर।

◎ ड़ तथा ढ़ का उच्चारण तथा प्रांतीयता के कारण पैदा होने वाले भ्रम–

ड / ड़ डमरू, सड़क

'ड़' से कोई शब्द शुरू नहीं होता। इसी तरह,

ढ / ढ़ ढक्कन, पढ़ाई

ढ़ से भी कोई शब्द शुरू नहीं होता।

Scanned with CamScanner

नुकता लगाने में होने वाली अशुद्धियाँ : वैसे तो अब नुकते से मुक्ति पाने की कोशिश की जा रही है। लेकिन जहाँ नुकते से अर्थांतर हो रहा हो, वहाँ तो इसकी जरूरत रहेगी ही; जैसे–

जंग / जंग

उर्दू से आए, (शब्दों में) क़, ख़, ग़, ज़ तथा फ़ के नीचे नुकता लगता है; परंतु मानक वर्तनी के अनुसार नुकता ज़ तथा फ़ में ही मान्य है।

वर्तनी तथा उच्चारण संबंधी अशुद्धियाँ और उनका निराकरण

1. **ह्रस्व स्वर को दीर्घ और दीर्घ स्वर को ह्रस्व की तरह लिखना–**

अशुद्ध		शुद्ध
साधू	–	साधु
आधीन	–	अधीन
अध्यात्मिक	–	आध्यात्मिक
वुद्धी	–	बुद्धि

अशुद्ध		शुद्ध
बारात	–	बरात
उपर	–	ऊपर
बिमारी	–	बीमारी
शुद्धी	–	शुद्धि

2. **नासिका ध्वनियों में होने वाली अशुद्धियाँ–**

अशुद्ध		शुद्ध
प्रान	–	प्राण
प्रन	–	प्रण
करन	–	कर्ण
रनक्षेत्र	–	रणक्षेत्र

अशुद्ध		शुद्ध
गुन	–	गुण
करन	–	करण
त्रिकोन	–	त्रिकोण
बान	–	बाण

3. **कुछ और अशुद्धियाँ जो गलत उच्चारण के कारण होती हैं।**

अशुद्ध		शुद्ध
किरसन	–	कृष्ण
साम	–	शाम
लग्गई	–	लड़ाई
किरपा	–	कृपा

अशुद्ध		शुद्ध
बहोत	–	बहुत
अवश्यक	–	आवश्यक
कस्ट	–	कष्ट
क्रपया	–	कृपया

हमने जाना

1. भाषा की सबसे छोटी इकाई वर्ण कहलाती है।
2. वर्णों के व्यवस्थित समूह को वर्णमाला कहते हैं।
3. वर्णों के दो भेद हैं–1. स्वर 2. व्यंजन
4. स्वर के तीन भेद हैं– ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत।
5. व्यंजनों का उच्चारण स्वरों की सहायता से किया जाता है।
6. व्यंजनों के भेद– स्पर्श व्यंजन, ऊष्म व्यंजन, अंतस्थ व्यंजन।
7. दो स्वर रहित व्यंजनों के मेल से संयुक्त व्यंजन बनता है।
8. स्वररहित व्यंजन के भिन्न स्वर सहित व्यंजन से मेल होने पर संयुक्ताक्षर बनता है।
9. स्वर रहित व्यंजन का समान स्वर सहित से मेल होने पर द्वित्व व्यंजन बनता है।
10. शब्दों के वर्णों को अलग-अलग करना वर्ण-विच्छेद तथा वर्णों को जोड़ना वर्ण-संयोग कहलाता है।

Scanned with CamScanner

अभ्यास

मौखिक प्रश्न

1. नीचे दिए गए प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–
   (क) वर्ण भाषा की सबसे छोटी इकाई क्यों है?
   (ख) वर्ण के कौन-कौन-से मुख्य भेद होते हैं?
   (ग) स्वर के कौन-कौन-से भेद होते हैं?
   (घ) व्यंजनों के भेदों के नाम बताइए।

लिखित प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए :
   (क) इनमें से कौन-सा वर्ण स्पर्श व्यंजन नहीं है?
   क च ट य
   (ख) इनमें से कौन-सा व्यंजन अल्पप्राण है?
   ख थ च फ
   (ग) ऑ की ध्वनि हिंदी में किस भाषा से आई है?
   उर्दू से अंग्रेज़ी से पुर्तगाली से तुर्की से
   (घ) इनमें से किस शब्द की वर्तनी सही है?
   रनभूमि रणभूमि रनभूमी रणभूमी

2. निम्नलिखित कथनों में से सही कथन के सामने सही (✓) और गलत के सामने (×) का चिह्न लगाइए–
   (क) वर्ण भाषा की छोटी-से-छोटी इकाई का नाम है।
   (ख) वर्णों की कोई माला नहीं होती।
   (ग) स्वरों की मात्राएँ होती हैं व्यंजनों की नहीं।
   (घ) पंचम वर्ण के स्थान पर अनुस्वार बिंदु का प्रयोग संभव है।
   (ङ) ड़ तथा ढ़ से कोई शब्द शुरू नहीं होता।
3. वर्ण की परिभाषा लिखिए। हिंदी भाषा में वर्ण के कितने भेद किए गए हैं?
4. ह्रस्व स्वर और दीर्घ स्वर का अंतर स्पष्ट कीजिए।
5. अनुस्वार और अनुनासिक का अंतर बताते हुए प्रत्येक के दो-दो उदाहरण लिखिए।
6. स्वर और व्यंजन में अंतर स्पष्ट कीजिए।
7. अल्पप्राण और महाप्राण किसे कहते हैं? दोनों के तीन-तीन उदाहरण लिखिए।
8. संयुक्त व्यंजन तथा संयुक्ताक्षर किसे कहते हैं? पाँच-पाँच उदाहरण भी लिखिए–

Scanned with CamScanner

9. निम्नलिखित संयुक्त व्यंजनों से दो-दो शब्द बनाइए–

ब्द ______ ______ ट्र ______ ______ ग्य ______ ______

व्य ______ ______ श्त ______ ______ प्र ______ ______

10. निम्नलिखित शब्दों का वर्ण-विच्छेद कीजिए–

कक्षा – ______

सुपुत्र – ______

धर्मात्मा – ______

अनावश्यक – ______

संदर्भ – ______

वैज्ञानिक – ______

आशीर्वाद – ______

11. निम्नलिखित संयोगों से बने दो-दो शब्द लिखिए–

द्	+	व	=	______	______		र्	+	व	=	______	______
श्	+	र	=	______	______		क्	+	ष	=	______	______
त्	+	र	=	______	______		ज्	+	ञ	=	______	______
ट्	+	र	=	______	______		प्	+	र	=	______	______

रचनात्मक क्रियाकलाप

- कार्डशीट को ताश के आकार में काटकर ताश के 25 पत्ते तैयार कीजिए। अब प्रत्येक पत्ते पर किसी भी एक शब्द का वर्ण-विच्छेद लिखिए। अपने पाँच साथियों के साथ मिलकर वर्ण-विच्छेदों से शब्द बनाकर बोलिए। जो सबसे कम समय में सबसे अधिक शब्द सही-सही बोलेगा वही नं० 1 कहलाएगा।
- चार्ट पेपर पर उच्चारण स्थान के आधार पर व्यंजन-भेद की तालिका बनाकर कक्षा में लगाइए।
- शब्द-सीढ़ी को पूरा कीजिए–

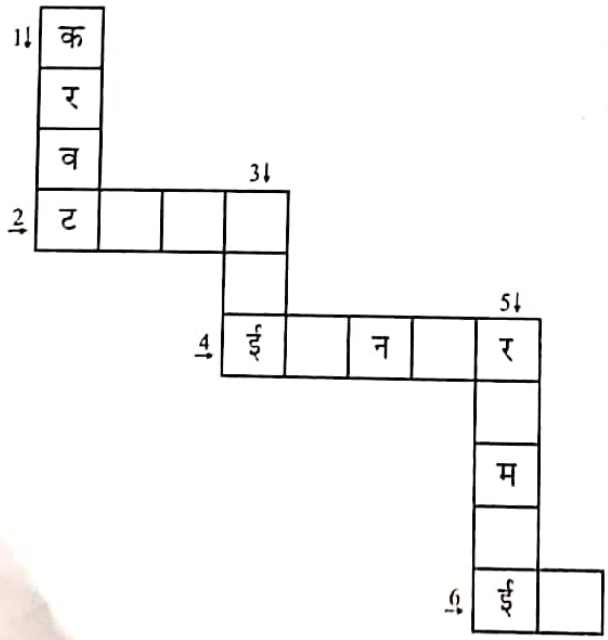

3

संधि

Joining

भारत पाकिस्तान में संधि हुई। बहुत सारे झगड़े निपट गए। दोनों नज़दीक आ गए।

ऐसा दो नज़दीकी, संबंधित राष्ट्रों में ही नहीं, शब्दों के बीच भी होता है। जैसे देशों, व्यक्तियों के बीच की संधियाँ टूटती हैं, वैसे ही शब्दों में भी संधि-विच्छेद या यों कहें संबंध-विच्छेद हो सकता है। ज़रूरत पड़ने पर ये फिर मिल जाते हैं।

निम्नलिखित शब्दों पर ध्यान दीजिए–

शब्द/शब्दांश	पहले पद का अंतिम वर्ण	+	दूसरे पद का पहला वर्ण	विकार (परिवर्तन)	संधियुक्त शब्द
पुस्तक + आलय	अ	+	आ	आ	पुस्तकालय
नर + ईश	अ	+	ई	ए	नरेश
निः + पाप	:	+	प	ष्प	निष्पाप
सत् + जन	त्	+	ज	ज्ज	सज्जन

पास-पास स्थित शब्दों के निकटस्थ वर्णों के मेल से होने वाले विकार को **संधि** कहते हैं।

संधि-विच्छेद

वर्णों में हुए मेल को तोड़ने की क्रिया को संधि-विच्छेद कहते हैं।

वातानुकूलन = वात + अनुकूलन

संधि का महत्व

संधि करने तथा संधि-विच्छेद की क्रिया का ज्ञान होने पर बड़े एवं जटिल शब्दों के अर्थ समझने में सहायता मिलती है।

संधि के प्रकार

संधि के तीन भेद किए गए हैं–

1. स्वर संधि
2. व्यंजन संधि
3. विसर्ग संधि

स्वर संधि

दो स्वरों के मेल से उनके स्वरूप में होने वाले परिवर्तन को 'स्वर संधि' कहते हैं।

नव + आगत = नवागत

अ + आ = आ

स्वर संधि के पाँच भेद हैं–

(क) दीर्घ संधि (ख) गुण संधि (ग) वृद्धि संधि (घ) यण संधि (ङ) अयादि संधि

Scanned with CamScanner

(क) दीर्घ संधि : जब 'अ', 'इ', 'उ' अपनी ही जाति के ह्रस्व या दीर्घ स्वर से मिलते हैं, तो उसी जाति का दीर्घ स्वर बन जाता है; जैसे–

अ	+	अ	=	आ	→	भाव	+	अर्थ	=	भावार्थ
अ	+	आ	=	आ	→	देव	+	आलय	=	देवालय
आ	+	अ	=	आ	→	रेखा	+	अंकित	=	रेखांकित
आ	+	आ	=	आ	→	महा	+	आत्मा	=	महात्मा
इ	+	इ	=	ई	→	रवि	+	इंद्र	=	रवींद्र
इ	+	ई	=	ई	→	गिरि	+	ईश	=	गिरीश
ई	+	इ	=	ई	→	मही	+	इंद्र	=	महींद्र
ई	+	ई	=	ई	→	रजनी	+	ईश	=	रजनीश
उ	+	उ	=	ऊ	→	सु	+	उक्ति	=	सूक्ति
उ	+	ऊ	=	ऊ	→	लघु	+	ऊर्मि	=	लघूर्मि
ऊ	+	उ	=	ऊ	→	वधू	+	उत्सव	=	वधूत्सव
ऊ	+	ऊ	=	ऊ	→	भू	+	ऊष्मा	=	भूष्मा

(ख) गुण संधि : यदि 'अ', 'आ' के आगे 'इ', 'इ', 'उ', 'ऊ' 'ऋ' आकर मिलें, तो क्रमशः 'ए', 'ओ', 'अर्' हो जाते हैं; जैसे–

ए, ओ, अर्
गुण संधि कर

अ	+	इ	=	ए	→	देव	+	इंद्र	=	देवेंद्र
अ	+	ई	=	ए	→	दिन	+	ईश	=	दिनेश
आ	+	इ	=	ए	→	महा	+	इंद्र	=	महेंद्र
आ	+	ई	=	ए	→	रमा	+	ईश	=	रमेश
अ	+	उ	=	ओ	→	नव	+	उदय	=	नवोदय
अ	+	ऊ	=	ओ	→	जल	+	ऊर्मि	=	जलोर्मि
आ	+	उ	=	ओ	→	कथा	+	उत्सव	=	कथोत्सव
आ	+	ऊ	=	ओ	→	गंगा	+	ऊर्मि	=	गंगोर्मि
अ	+	ऋ	=	अर्	→	राज	+	ऋषि	=	राजर्षि
आ	+	ऋ	=	अर्	→	महा	+	ऋषि	=	महर्षि

(ग) वृद्धि संधि : 'अ', 'आ' के बाद 'ए' या 'ऐ' आ जाए, तो मिलकर 'ऐ', हो जाता है; जैसे–

अ	+	ए	=	ऐ	→	एक	+	एक	=	एकैक
अ	+	ऐ	=	ऐ	→	मत	+	ऐक्य	=	मतैक्य
आ	+	ए	=	ऐ	→	सदा	+	एव	=	सदैव
आ	+	ऐ	=	ऐ	→	महा	+	ऐश्वर्य	=	महैश्वर्य

जब 'अ' या 'आ' के बाद 'ओ', 'औ' आए, तो मिलकर 'औ', हो जाता है; जैसे–

अ	+	ओ	=	औ	→	परम	+	ओज	=	परमौज
अ	+	औ	=	औ	→	वन	+	औषध	=	वनौषध

Scanned with CamScanner

आ	+	ओ	=	औ	→	महा	+	ओज	=	महौज
आ	+	औ	=	औ	→	महा	+	औदार्य	=	महौदार्य

(घ) यण संधि : यदि इ, ई, उ, ऊ, ऋ के साथ कोई विजातीय (दूसरी जाति का) स्वर आ मिले, तो इ, ई का 'य्', उ, ऊ का 'व्' और ऋ का 'र्' हो जाता है; जैसे-

इ	+	उ	=	यु		उ	+	इ	=	वि

विस्तार देकर देखते हैं–

इ	+	अ	=	य	→	अति	+	अधिक	=	अत्यधिक
इ	+	आ	=	या	→	इति	+	आदि	=	इत्यादि
ई	+	अ	=	य	→	नदी	+	अर्पण	=	नद्यर्पण
ई	+	आ	=	या	→	देवी	+	आगम	=	देव्यागम
इ	+	उ	=	यु	→	प्रति	+	उत्तर	=	प्रत्युत्तर
इ	+	ऊ	=	यू	→	नि	+	ऊन	=	न्यून
इ	+	ए	=	ये	→	प्रति	+	एक	=	प्रत्येक
उ	+	अ	=	व	→	सु	+	अच्छ	=	स्वच्छ
उ	+	आ	=	वा	→	सु	+	आगत	=	स्वागत
उ	+	ए	=	वे	→	अनु	+	एषण	=	अन्वेषण
उ	+	इ	=	वि	→	अनु	+	इति	=	अन्विती
ऋ	+	आ	=	रा	→	मातृ	+	आज्ञा	=	मात्राज्ञा

(ङ) अयादि संधि : 'ए', 'ऐ', 'ओ', 'औ' के बाद कोई विजातीय स्वर आए, तो

ए का 'अय्' ऐ का 'आय्' ओ का 'अव्'

औ का 'आव्' हो जाता है; जैसे–

ए	+	अ	=	अय्	→	ने	+	अन	=	नयन
ऐ	+	अ	=	आय्	→	नै	+	अक	=	नायक
ओ	+	अ	=	अव्	→	भो	+	अन	=	भवन
औ	+	अ	=	आव्	→	पौ	+	अक	=	पावक
औ	+	इ	=	आवि	→	नौ	+	इक	=	नाविक

व्यंजन संधि

व्यंजन का किसी व्यंजन से अथवा किसी स्वर से मेल होने पर जो विकार (परिवर्तन) उत्पन्न होता है, वह **व्यंजन संधि** कहलाती है।

व्यंजन संधि के नियम–

1. स्पर्श व्यंजनों के वर्ग के प्रथम वर्ण (क्, च्, ट्, त्, प्) का मेल) किसी स्वर अथवा य्, र्, ल्, व् में से किसी वर्ण से होने पर वर्ग का प्रथम वर्ण अपने ही वर्ग के तीसरे वर्ण (ग्, ज्, ड्, द, ब्) में बदल जाता है; जैसे–

क्	+	ई	=	ग्	→	वाक्	+	ईश	=	वागीश
च्	+	अ	=	ज्	→	अच्	+	अंत	=	अजंत
ट्	+	आ	=	डा	→	षट्	+	आनन	=	षडानन
त्	+	ई	=	दी	→	जगत्	+	ईश	=	जगदीश
प्	+	ज	=	ब्ज	→	अप्	+	ज	=	अब्ज

Scanned with CamScanner

2. स्पर्श व्यंजनों में किसी भी वर्ग के पहले वर्ण (क्, च्, ट्, त्, प्) का मेल 'न' या 'म' से हो, तो पहला वर्ण अपने ही वर्ग का अंतिम वर्ण हो जाता है–

जगत्	+ नाथ	=	जगन्नाथ	सत्	+ मार्ग	=	सन्मार्ग
वाक्	+ मय	=	वाङ्मय	षट्	+ मास	=	षण्मास

3. 'त्' या 'द्' के बाद दूसरे शब्द के प्रारंभ में 'ल' हो, तो त् , द् 'ल्' में बदल जाते हैं–

उत्	+ लास	=	उल्लास	तत्	+ लीन	=	तल्लीन
उत्	+ लेख	=	उल्लेख				

4. 'त्' या 'द्' के बाद यदि 'ज', 'झ' हों, तो 'त्' या 'द्' दोनों ही 'ज्' में बदल जाते हैं–

विपद्	+ जाल	=	विपज्जाल	सत्	+ जन	=	सज्जन

5. 'त्' या 'द्' के बाद यदि श् हो तो, 'त्' और 'द्' 'च्' में तथा दूसरे शब्द का प्रारंभिक वर्ण 'श्' 'छ्' में बदल जाता है।

उत् + श्वास = उच्छ्वास

6. 'त्' या 'द्' के बाद यदि 'च' या 'छ' हो, तो प्रथम शब्द का अक्षरांत 'च्' हो जाता है; जैसे–

सत्	+ चरित्र	=	सच्चरित्र	उत्	+ चारण	=	उच्चारण

7. प्रथम शब्दांश के अंतिम 'ऋ ', 'र' के बाद यदि दूसरे शब्द के अंत में 'न् 'आए, तो 'न्' का 'ण' हो जाता है।

प्र	+ मान	=	प्रमाण	राम	+ अयन	=	रामायण

लेकिन, दुर्जन, दर्शन, अर्चन जैसे शब्दों में यह नियम लागू नहीं होता।

विसर्ग संधि

विसर्ग (:) के बाद स्वर या व्यंजन, के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं, जैसे–

निः	+ रस	=	नीरस	दुः	+ चरित्र	=	दुश्चरित्र
निः	+ रोग	=	नीरोग	दुः	+ शासन	=	दुश्शासन
निः	+ छल	=	निश्छल	निः	+ चल	=	निश्चल

विसर्ग संधि के नियम–

1. विसर्ग से पहले कोई स्वर हो और बाद में 'च', 'छ' या 'श' हो, तो विसर्ग हटकर 'श्' में परिवर्तित हो जाता है। (श् को श की तरह श् से पाई हटाकर लिखा जा सकता है।)

निः	+ छल	=	निश्छल	निः	+ छिद्र	=	निश्छिद्र

2. विसर्ग के बाद यदि 'त' या 'स' हो, तो विसर्ग 'स्' में बदल जाता है।

दुः	+ साहसी	=	दुस्साहसी	नमः	+ ते	=	नमस्ते
मनः	+ ताप	=	मनस्ताप	निः	+ तेज	=	निस्तेज

3. विसर्ग से पहले 'इ' या 'उ' हों और विसर्ग के बाद क / ख / ट / ठ / प / फ हो, तो विसर्ग ष् (ः) में परिवर्तित हो जाएगा; जैसे–

निः	+ पाप	=	निष्पाप	धनुः	+ टंकार	=	धनुष्कार
निः	+ कलंक	=	निष्कलंक	निः	+ ठुर	=	निष्ठुर

4. **विसर्ग का ओ होना–** विसर्ग से पहले यदि 'अ' हो और उसका मेल 'अ' या किसी वर्ग के तीसरे, चौथे या पाँचवें वर्ण तथा य / र / ल / व / ह से हो, तो विसर्ग का 'ओ' हो जाता है।

मनः	+ बल	=	मनोबल	मनः	+ रंजन	=	मनोरंजन
अधः	+ गति	=	अधोगति	वयः	+ वृद्ध	=	वयोवृद्ध
मनः	+ योग	=	मनोयोग	तपः	+ वन	=	तपोवन
मनः	+ विकार	=	मनोविकार	मनः	+ रथ	=	मनोरथ

Scanned with CamScanner

5. विसर्ग से पहले 'अ' या 'आ' न हों, बल्कि कोई अन्य स्वर हो और बाद में भी कोई स्वर या वर्ग का तीसरा / चौथा / पाँचवाँ वर्ण या य / र / ल / व / ह में से कोई हो, तो विसर्ग का 'र्' में परिवर्तन हो जाता है।

निः	+	आहार	=	निराहार	दुः	+	जन	=	दुर्जन
निः	+	धन	=	निर्धन	दुः	+	गुण	=	दुर्गुण
निः	+	गुण	=	निर्गुण	निः	+	दोष	=	निर्दोष

हमने जाना

1. दो निकटस्थ वर्णों (ध्वनियों) के मेल से उत्पन्न विकार को संधि कहते हैं।
2. वर्णों में हुए मेल को तोड़ना संधि-विच्छेद कहलाता है।
3. संधि के तीन भेद होते हैं– (क) स्वर संधि (ख) व्यंजन संधि (ग) विसर्ग संधि
4. दो स्वरों के मेल से उत्पन्न विकार को स्वर संधि कहते हैं।
5. स्वर संधि के पाँच भेद हैं– (क) दीर्घ (ख) गुण (ग) वृद्धि (घ) यण (ङ) अयादि
6. व्यंजन का व्यंजन अथवा स्वर से मेल होने पर उत्पन्न विकार व्यंजन संधि कहलाता है।
7. विसर्ग का स्वर या व्यंजन से मेल होने पर उत्पन्न विकार विसर्ग संधि कहलाता है।

मौखिक प्रश्न

1. **नीचे दिए गए प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**
   (क) संधि किसे कहते हैं?
   (ख) संधि के कितने भेद होते हैं?
   (ग) स्वर संधि किसे कहते हैं? एक उदाहरण भी दीजिए।
   (घ) व्यंजन संधि किसे कहते हैं?
   (ङ) विसर्ग संधि किसे कहते हैं?

मौखिक प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. **सही उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाइए–**
   (क) संधि के कितने भेद होते हैं?
   दो ○ तीन ○ चार ○ पाँच ○
   (ख) 'प्रत्यारोपण' का संधि-विच्छेद होगा–
   प्रत्येक + आरोपण ○ प्रति + आरोपण ○ प्रत्य + आरोपण ○ प्रत्या + आरोपण ○
   (ग) 'जगत् + ईश = जगदीश' किस संधि भेद के अंतर्गत आता है?
   स्वर संधि ○ व्यंजन संधि ○ विसर्ग संधि ○ सभी गलत हैं। ○
   (घ) 'दुर्जन' का संधि-विच्छेद होगा–
   दुः + जन ○ दुर् + जन ○ दु + अरजन ○ दुं + जन ○
   (ङ) 'स्वागत' का संधि-विच्छेद होगा–
   सु + आगत ○ स्व + आगत ○ स्वा + गत ○ स्वा + आगत ○

Scanned with CamScanner

2. निम्नलिखित शब्दों में संधि कीजिए–

रमा + ईश = _____

सदा + एव = _____

तत् + लीन = _____

महा + उदय = _____

महा + आत्मा = _____

जगत् + नाथ = _____

देव + आलय = _____

नि: + कपट = _____

मन: + रथ = _____

नै + अक = _____

एक + एक = _____

नौ + इक = _____

3. संधि-विच्छेद कीजिए–

मतैक्य _____

पर्यावरण _____

रमेश _____

हिमालय _____

महर्षि _____

एकैक _____

देहांत _____

सुरेंद्र _____

महोदय _____

हर्षोलास _____

महात्मा _____

स्वागत _____

नमस्ते _____

भारतेंदु _____

निर्गुण _____

संतोष _____

4. निम्नलिखित शब्दों के सही संधि-विच्छेद पर सही (✓) का चिह्न लगाइए–

अधोगति	=	अध:	+	गति	○	अधो	+	गति ○
नयन	=	ने	+	अन	○	नै	+	अन ○
यद्यपि	=	यद्य	+	अपि	○	यदि	+	अपि ○
सत्याग्रह	=	सत्य	+	आग्रह	○	सत्या	+	ग्रह ○
अश्वारोही	=	अश्वा	+	रोही	○	अश्व	+	आरोही ○

5. संधि की परिभाषा लिखिए। संधि के भेदों को उदाहरण देकर समझाइए।

रचनात्मक क्रियाकलाप

❖ अपनी पाठ्यपुस्तक से 10 संधियुक्त शब्द खोजकर उनका संधि-विच्छेद कीजिए और संधि का भेद भी बताइए। यह कार्य अपने शिक्षक/शिक्षिका के निर्देशन में सहपाठियों के साथ सामूहिक क्रियाकलाप के रूप में कीजिए।

Scanned with CamScanner